कोल जनजाति की महिलाओं में टेलीविज़न का प्रभाव

[1]शिव शंकर सिंह, [2]डॉ. हितेन्द्र सिंह राठौड़

[1]शोधार्थी, शिव शंकर सिंह वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान
[2]शोध निर्देशक, डॉ. हितेन्द्र सिंह राठौड़ (सह–आचार्य) समाजशास्त्र विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

सार- प्रस्तुत शोध पत्र में रीवा जिले की ''कोल जनजाति की महिलाओं में टेलीविज़न का प्रभाव'' का अध्ययन किया गया है। मानव सभ्यता के विकास में विचारों के आदान प्रदान का महत्वपूर्ण योगदान है। संचार की अवश्यकता मानव सभ्यता के प्रारम्भ से ही प्रत्येक समाज को रहा है। संचार ही वह माध्यम है जिससे संस्कृति का हस्तानान्तरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में किया जाता रहा है। इसके द्वारा ही संस्कृति का विकास और विस्तार के साथ–साथ परिवर्तन होता है जिससे समाज में निरन्तरता बनी रहती है। टेलीविजन हमारे दिन–प्रतिदिन के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। दृश्य–श्रव्य माध्यम होने के कारण इसका व्यापक और बहुआयमी प्रचार–प्रसार हुआ। वर्तमान में भारतीय समाज नें चँहुमुखी विकास के सोपान तय किये हैं परन्तु एक समाज जनजाति समाज भी है जहाँ परिवर्तन की गति धीमी या नगण्य है। टेलीविजन की पहुँच जनजातियों तक अपनी खूबियों के कारण पहुॅच बना रहा है वे किसी न किसी रूप में अवश्य प्रभावित हुए हैं। टेलीवीजन के सम्पर्क में आने के बाद उनमें क्या बदलाव परिलक्षित हो रहा है। टेलीविज़न देखने की समयावधि कितनी है। कार्यक्रम के प्रकार तथा देखने के प्रमुख कारणो को ज्ञात करने के लिए 100 कोल महिलाओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन प्रणाली के आधार पर चयन किया गया है।

मूल शब्द : रीवा जिला, कोल जनजाति, महिला, कार्यक्रम, टेलीविज़न ।

प्रस्तावना

मानव सभ्यता के विकास में संचार का महत्वपूर्ण योगदान है। व्यक्ति अपनी भावनाओं, विचारों को अन्य व्यक्तियों तक संचार के माध्यम से पहुँचाता है। जब भाषा व बोली का विकास नहीं था तब चित्रों तथा प्रतीकों के माध्यम से अपने विचारों का आदान प्रदान किया जाता रहा है। संचार की आवश्यकता प्राचीन काल से ही प्रत्येक समाज में रहा है जिससे समाज के विकास की ओर अग्रसर हुआ है क्योंकि संचार ही वह माध्यम से जिससे संस्कृति का हस्तानान्तरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में किया जाता है। इसके द्वारा ही संस्कृति का विकास और विस्तार के साथ–साथ परिवर्तन होता है जिससे समाज में निरन्तरता बनी रहती है। विल्वर श्राम ने सूचनाओं, विचारों तथा अभिवृत्तियों के आदान–प्रदान को सामान्य तौर पर संचार माना है उनका मानना है कि संचार के अन्तर्गत व्यक्ति सूचनाओं के आधार पर दूसरे व्यक्ति, समूह, समाज तथा अन्य देशों के साथ साम्य स्थापित करता है।[1] जीवन को अधिक सुखमय एवं संपन्न बनाने के लिए मनुष्य ने कई आविष्कार किए। एक दौर था जब मनुष्य अपनी सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान पहुॅचाने के लिए ढ़ोल–नगाड़े का प्रयोग करते थे फिर हरकारो का प्रयोग किया जाने लगा। धीरे–धीरे परिवर्तन होता गया और सुचना को एक स्थान से दूसरी स्थान पहुॅचाने के लिए अलग–अलग माध्यम का प्रयोग हुआ। आज का दौर मीडिया का है। आकाशवाणी एवं दिव्यदृिष्ट का वर्णन पुराणों तथा काव्यों में की गई है। जिसे मनुष्य ने अपने अविष्कार के माध्यम से सच कर दिखाया। टेलीविजन हमारे दिन–प्रतिदिन के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। टेलीविजन वर्तमान में 21वीं सदी में जनसंचार का सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम बनकर उभरा है। समाज में जागरूकता लाने का सबसे अच्छा साधन टेलीविजन है। जनजाति समाज मुख्यधारा से अलग–थलग रह रहा है। इनकी अपनी भाषा, संस्कृति, धार्मिक विश्वास, अर्थव्यवस्था, राजनैतिक व्यवस्था रही है। टेलीविज़न आने के पूर्व कोल जनजाति की महिलाओं का दिनचर्या घर के कामो और मजदूरी तक ही सीमित रहा है। शिक्षा के प्रति जागरूक न होने के कारण उन्हें शासन की ओर से प्रदान करने वाली सुविधाओं के बारे में कोई जानकारी थी। वे अपने परम्परागत परिधानों का प्रयोग, अपने रीति–रिवाजों को, विभिन्न त्योहारों को परम्परागत तरीके से मनाया करतीं थी। वे अंधविश्वासी एवं रूढ़िवादी हुआ करती थीं जादू–टोना में उनका अधिक विश्वास था। गरीबी के कारण महिलाएँ कम आयु में ही खेतों या खदानों में मजदूरी का कार्य करने लगती थी। किन्तु टेलीविज़न के कारण इनमें परिवर्तन परिलक्षित हो रहे है। टेलीवीजन के सम्पर्क में आने के बाद बदलाव परिलक्षित हो रहा है।

अध्ययन समस्या–

टेलीविजन समाज में जागरूकता और सुचना प्रदान करने का कार्य करता है। जनजातियों के विकास के लिए टेलीविजन में तरह–तरह के कार्यक्रमों का प्रसारण होता है कृषि दर्शन, ज्ञानदर्शन आदि। किन्तु कार्यक्रम के प्रसारण के समय के आधार पर उन तक कितना पहुॅच पाता है या प्रसारित कार्यक्रम से कितना लाभ प्राप्त करते है। किस प्रकार के कार्यक्रम ज्यादा पसंद किए जाते है और पसंद करने का कारण क्या है । इसी को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन ''टेलीविज़न एवं महिलाएं (कोल जनजाति के विशेष संदर्भ में)'' विषय पर केन्द्रित है। अध्ययन हेतु 100 कोल महिलाओं का चयन किया गया है। अध्ययन समस्या का सूत्रीकरण निम्न उद्देश्यों के आधार पर किया गया है –

- कोल जनजाति की महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि का पता लगाना।
- कोल जनजाति की महिलाओं की सप्ताह में टेलीविजन देखने की समयावधि का पता लगाना।

- कोल जनजाति की महिलाओं टेलीविज़न देखने के प्रमुख कारणों का पता लगाना।

प्राकल्पनाएँ –

- टेलीविज़न से कोल जनजाति की महिलाओं के जीवन शैली बदली है।
- टेलीविजन के कारण महिलाओं के सार्वजनिक जीवन में परिवर्तित हुआ है।

कोल

मध्य भारत की प्रायः सभी जनजातियों प्रोटो– आस्ट्रेल्वायड प्रजाति लक्षणों को प्रस्तुत करती है। इनका एक प्रतिनिधि समूह कोलारियन जिसमें मुण्डा, हो, सन्थाल, जुआँग आदि आते हैं। कोल इसी प्रजाति के माने जाते है । आर. भी.रसेल 1916 के अनुसार कोल कोलेरियन परिवार की जनजाति है[2] किन्तु **अमीर हसन 1972 के** अनुसार यह मुण्डा, सन्थाल, भूमिज, तमरिया, जुआंग जनजातियों से जुड़ी है।[3] मध्य प्रदेश के जिला रीवा में कोल सबसे अधिक पाए जाते हैं। कोल अपने को सहारा माता के वंशज मानते हैं, जो महाकाव्य प्रसिद्धि के सावरों के सदस्य हैं; उन्हें 'कोल की माँ' के रूप में जाना जाता है।''[4] मध्यप्रदेश की जनजातीय जनसंख्या के प्रतिशत का 25.00 प्रतिशत जनसंख्या कोल जनजाति की है, जो अन्य जनजातियों की तुलना में अधिक है। क्रूक्स डब्लू 1975 ने कोल शब्द 'मुण्डारी' भाषा से उत्पन्न माना है अर्थात शब्द 'कोल' मुंडारी शब्द को से लिया गया है, जिसका अर्थ है होरो, हारा, हर, हो, जिसका तात्पर्य 'आदमी' से है जो कुछ समय के बाद कोरो के रूप में परिवर्तित हो गया जिससे कि कोल खुद की पहचान करते हैं। कोल ने अपना नाम उस भाषा समूह को दिया, जिसे पहले कोलरियन के नाम से जाना जाता था। कोल का संबंध प्रोटो–ऑस्ट्रलॉइड जातीय से था। उनकी औरतें 'कोलिन' और वह जहाँ उनके निवास स्थान होते है उसे 'कोलान' कहते है।[5] भारत की जनजातियों में कोल जनजाति का एक विशिष्ट स्थान है। हेडन के अनुसार कोलो को पूर्व द्रविड जनजाति समूह में रखा जा सकता है।[6] कोल लोगों को छोटा नागपुर के मुण्डाओं की एक शाखा के रूप में देखा जा सकता है।

रहन–सहन

कोल के झोपड़ी या घर खर–पतवार के बने होते थे तथा दीवारें प्रायः मिट्टी से पुताई की हुई रहती थी। इनकी झोपड़ियाँ कुछ इस तरह से बनी हुई होती है कि सबका दरवाजा एक ही ओर खुले। एक या दो कमरे वाले झोपड़ी में अल्मुनियम के कुछ बर्तनों, तीन छोटे और बड़े घड़े, चारपाइयाँ, ओढ़ने के लिए मोटे चादरों तथा कुछ पहनने के कपड़ों ही होते है तथा छोटी–बड़ी कुल्हाड़ी, हॅसिया और रस्सियाँ और टोकरियाँ रखते हैं जिनका प्रयोग वनोपज से आजीविका प्राप्त करने के लिए करते हैं। स्त्रियां एक मोटी या बड़ी साड़ी का प्रयोग करती हैं। नवयुवती सामान्यतया एक झुल्ला (एक प्रकार का ब्लाउज) का प्रयोग करती हैं। ठण्ड के समय में कोल स्त्रियाँ मोटी चादर या दरीनुमा कपड़ा ओढती हैं। कोल महिलाएं कान के लिए बाली, फुलिया, झुमके, गर्दन के लिए एक माला होती है जिसमें गोल पतली पत्ती लगी होती है, कोहनी के ऊपर की भुजाओं पर एक चांदी की चूड़ा और कोहनी के नीचे कई चांदी की चूड़ियाँ पहनतीं हैं, जिनके बीच पीली और लाल लाख की चूड़ियां होती हैं। पैरों में पायल तथा पैर की अंगुली में विछिया होती हैं। कोल महिला के शरीर पर गोदना के निशान बनवातीं है।

मनोरंजन एवं धार्मिक विश्वास

कोल स्त्री–पुरूष एंव बच्चे गाने के बहुत शौकीन होते हैं। कोलों में निम्नांकित वाद्य यंत्र प्रचलित हैं – ढोलक ओर ढ़ोल, नगड़िया, झांज, मंजीरा, कार्तेल या करतल, न्योरा तथा घुँघरू हैं। नृत्य और गायन के कार्यक्रम महिलाएं भी सहयोग करतीं है। ये गीत है–दादर या दादरा, भगत, राई, फाग, कबीरी, दोहरी । कोलों के अनेक देवी–देवता है दुल्हा देव, भैरव बाबा, भूमियार, भगत बाबा प्रमुख जातीय देवता है, गरैया, विरहा बाबा आदि प्रमुख स्थानीय देव हैं।

शोध क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन में मध्यप्रदेश के जिला रीवा का चयन कियास गया है। रीवा का नामकरण इस क्षेत्र की पुण्य सलिला नर्मदा के नाम से हुआ है । नर्मदा को संस्कृत ग्रन्थों में रेवा कहा गया है । यमुना का भी एक नाम रेवा है । यमुना और नर्मदा के बीच बसे इस नगर का नामकरण रेवा हुआ है ।ऐतिहासिक प्रदेश रीवा विश्व जगत में सफेद शेरों की धरती के रूप में भी जाना जाता रहा है। सुपाड़ी के द्वारा निर्मित खिलौना एवं घर की साज–सज्जा के सामान के लिए रीवा विश्व विख्यात है। प्राकृतिक स्वरूप की दृष्टि से रीवा संभाग का सम्पूर्ण क्षेत्र पठारी है। यह संभाग भारत वर्ष के हृदय प्रदेश म.प्र. का उत्तरीय–पूर्वी भाग है।[7] वर्तमान मे रीवा शहर में कुल 45 वार्ड है, जिसमे 6 वार्ड अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के लिये आरक्षित है, जिसमें वार्ड क्रमांक 1 एवं 43 अनुसूचित जनजाति के लिये तथा वार्ड क्रमांक 28, 38, 39, 40 अनुसूचित जाति के लिये आरक्षित है।

अध्ययन का महत्व–

जनसंचार साधन विकास एवं परिवर्तन का एक प्रमुख कारक है। अतः यह अध्ययन कोल जनजातीय महिलाओं में टेलीवीजन कार्यक्रम और देखने के प्रमुख कारणो को समझने में सहायता देना साथ ही जनजातीय महिलाओं से संबंधित नीतियाँ बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

तथ्य संकलन – प्रस्तुत अध्याय में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के तथ्यों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक तथ्यों का संकलन, साक्षात्कार, अनुसूची एवं अवलोकन पद्धति द्वारा किया गया है। द्वितीयक तथ्यों में पुस्तकें, रिपोर्ट एवं अन्य प्रलेखनीय सामग्री का प्रयोग किया गया है।

तथ्य विश्लेषण –निष्कर्ष निकालने के लिए उन्हें सरलीकरण और सक्षिप्तीकरण किया गया, इसके लिए वर्गीकरण और सारणीयों का प्रयोग किया गया। वर्गीकरण में सभी तथ्यों को एकत्र कर लिया गया तो उसके बाद महत्वपूर्ण तथ्यों को तुलनात्मक रूप से सारणीयन के आधार पर प्रस्तुत किया गया। इसके बाद प्रत्येक सारणी का विश्लेषण किया गया।
प्रस्तुत अध्ययन में कोल महिलाएं टेलीविजन का प्रयोग कितने समय से कर रहे हैं व किस समय टेलीविजन देखतीं हैं, किस प्रकार के चैनल को देखना पसन्द करतीं हैं, प्रसारित कार्यक्रमों को वरीयता, देखने का प्रमुख कारण, टेलीविजन के कारण महिलाओं के सार्वजनिक जीवन में परिवर्तन परिलक्षित है कि नहीं के बारे में जानने का प्रयास किया गया है। इन्हें सारणी के द्वारा विश्लेषण सहित प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन के लिए सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति तथा जीवनशैली को समझने के लिए सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का ज्ञान होना आवश्यक है।

सारणी संख्या 1
आयु के आधार पर

क्रमांक	आयु	आवृत्ति	प्रतिशत्
1	15–25 वर्ष	27	27
2	25–35 वर्ष	34	34
3	35–45 वर्ष	20	20
4	45–55 वर्ष	13	13
5	55 वर्ष से अधिक	6	6
कुल योग		100	100

उपरोक्त सारणी संख्या 1 से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक उत्तरदात्री 25 – 35 वर्ष की पाई गई है। जिसका प्रमुख कारण यह है कि इस उम्र की महिलाएँ आसपास के घरो में कार्य कर करती है और दोपहर या शाम को घर वापस आ कर टेलीवीजन देखतीं है। साथ ही अपने घर में रहकर गृहस्थी से सम्बंधित कार्य करती है। सबसे कम टेलीविज़न देखने वाली उत्तरदात्री 55 वर्ष से अधिक जो पुरानी पीढ़ी के होने के कारण पश्चिमी सभ्यता के कार्यक्रम को पसंद नही करतीं और अपनी उम्र की महिलाओं के साथ वार्तालाप कर अपना मनोरंजन करतीं है।

सारणी संख्या 2
परिवार के स्वरूप के आधार पर

क्रमांक	परिवार का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत्
1	संयुक्त	8	8
2	एकाकी	92	92
कुल योग		100	100

सारणी संख्या 2 में दिये गये तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश कोल परिवार एकाकी प्रकृति के है। कोल जनजाति में पुत्र के विवाह होने के बाद पुत्र स्वयं के लिए अलग मकान बना कर रहने के कारण इनमें एकांकी परिवार ज्यादा देखा गया है।

सारणी संख्या 3
सप्ताह में टेलीविजन देखने की प्रवृत्ति के आधार पर

क्रमांक	सप्ताह में टेलीविजन देखने की समयावधि	सप्ताह में टेलीविजन देखने की समयावधि	प्रतिशत
1	7 घण्टे	24	24
2	14 घण्टे	9	9
3	21 घण्टे या अधिक	67	67
कुल योग		100	100

उपरोक्त सारणी 3 से यह स्पष्ट होता है कि सप्ताह में टेलीविजन देखने की प्रवृत्ति में अधिकांश उत्तादात्री सप्ताह में 21 घण्टे या अधिक टेलीविजन देखतीं हैं। सबसे कम उत्तरदाता सप्ताह में 14 घण्टे टेलीविजन देखतीं है। 7 घण्टे सप्ताह में टेलीविजन देखने वाली उत्तरदाताओं की संख्या (24) है।

सारणी संख्या 4
टेलीविजन देखने का समय

क्रमांक	टेलीविजन किस समय ज्यादा देखतीं है	टेलीविजन देखने का समय (प्रति दिन)	प्रतिशत
1	सुबह	5	5
2	दोपहर	17	17

3	शाम	8	8
4	रात	70	70
कुल योग		100	100

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक (70) कोल महिलाएं रात में टेलीविजन देखतीं है। इसका प्रमुख कारण यह है कि सुबह के समय कृषि, मजदूरी के लिए या व्यवसाय के लिए जातीं हैं। सुबह टेलीविज़न देखने वाली उत्तरदाताओं (5) है। दोपहर के समय टेलीविजन देखने में पाया गया कि (17) उत्तरदाता खेतों में कार्य करतीं है और दोपहर के समय घर में टेलीविजन देखतीं है। जबकि शाम को टेलीविजन देखने वाली उत्तरदाताओं (8) है।

सारणी संख्या 5

टेलीविजन पर प्रसारित कार्यक्रमों को वरीयता

क्रमांक	टेलीविजन पर कौन से कार्यक्रमों को अधिक प्राथमिकता	हाँ	नहीं	कुल
1	सामाजिक एवं सांस्कृतिक	82	18	100
2	धार्मिक	60	40	100
3	सूचना	43	57	100
4	मनोरंजन	90	10	100
5	जासूसी	71	29	100

उपरोक्त सारणी 5 से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता (90) मनोरंजन वाले कार्यक्रम जैसे– फिल्मी गीत, फिल्म, हस्य व्यंग वाले कार्यक्रम देखना ज्यादा पसन्द करती है। जबकि (82) संस्कृतिक कार्यक्रम एवं सामाजिक कार्यक्रम को प्राथमिकता देतीं है। अपने परिवार–रिश्तों में संतुलन बनाना तथा सम्बन्धों में अपनत्व लाना इन कार्यक्रमों के माध्यम से अच्छी तरह से जान पाती है। (60) उत्तरदाता धार्मिक कार्यक्रमों को अधिक पसन्द करती है। जासूसी कार्यक्रम को प्राथमिकता देने वाली उत्तरदाता की संख्या 71 है। (43) उत्तरदाताओं ने माना कि सूचना सम्बन्धी जानकारी में राजनीतिक कार्यक्रम की जानकारी, खेलकूद की जानकारी, देश–विदेश के बारे में, छोटी–छोटी घटनाओं की बारीकी से जानकारी टेलीविज़न में प्रदर्शित की जाती है।

सारणी संख्या 6

टेलीविजन देखने का प्रमुख कारण

क्रमांक	टेलीविजन देखने का प्रमुख कारण	हाँ	नहीं	कुल
1	सूचना एवं जानकारी की प्राप्ति	45	55	100
2	मनोरंजन के लिए	92	8	100
3	नवीन वस्तुओं के लिए	68	32	100
4	व्यक्तित्व का विकास करना	40	60	100
5	शिक्षण –प्रशिक्षण हेतु	38	62	100

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि (92) कोल महिलाओं लिए टेलीविजन देखने का प्रमुख कारण मनोरंजन को बताया है। क्योंकि कोल परिवार में अधिकाश सदस्य मजदूरी या अन्य प्रकार के कार्य करते है इस कारण जब समय मिलता है जो थकान दूर करने के साथ–साथ मनोरंजन भी करते है। उस वक्त टेलीवीज़न उनका मनोरंजन करने में सहायक होता है। जबकि (68) उत्तरदाताओं का टेलीवीजन देखने का प्रमुख कारण मनोरंजन के साथ–साथ नवीन वस्तुओ की जानकारी के लिए करतीं है। सूचना एवं जानकारी के वारे में (45) उत्तरदाताओं का मानना है कि टेलीविजन के माध्यम से देश–विदेश, कृषि एवं शासन की योजनाओं की सूचना प्राप्त होती है। (40) उत्तरदाताओं ने व्यक्तित्व विकास में टेलीविजन को महत्वपूर्ण माना हैं तथा शिक्षण –प्रशिक्षण हेतु टेलीविज़न को मानने वाले (38) उत्तरदाता को कहना है कि टेजीविज़न में अनेक प्रकार के शैक्षणिक कार्यक्रम आते है।

सारणी संख्या 7

टेलीविजन देखकर नवीन जीवनशैली की स्वीकृति

क्रमांक	टेलीविजन देखकर नवीन जीवनशैली को स्वीकार करते हैं	हाँ	नहीं	कुल
1	बातचीत में परिवर्तन	74	26	100
2	वेशभूषा एवं रीति रिवाज में परिवर्तन	88	12	100
3	छुआ–छूत के प्रति	80	20	100
4	वाल–विवाह	90	10	100
5	पर्दा–प्रथा	80	20	100

उपरोक्त सारणी 7 से यह स्पष्ट होता है कि टेलीविजन में प्रदर्शित कार्यक्रमों से बातचीत मे परिवर्तन देखने को मिला है। अधिकांश उत्तरदाताओं ने यह माना कि पहले वे 'रिमही' बोली या बघेलखण्डी बोलती थीं परन्तु टेलीवीजन के कारण खड़ी हिन्दी की बोलना सीख गई हैं। वेशभूषा एवं रीति रिवाज में परिवर्तन के आधार पर पाया गया कि (88) उत्तरदाता अपने

पारंपरिक रीति रिवाजों के साथ–साथ टेलीविजन में दिखाए जाने वाले त्योहारों को भी मनाने लगी है साथ ही वेशभूषा में परिवर्तन को माना है। टेलीविजन से छुआछूत की भावना में कमी अवश्य आयी है। कोल परिवारों में बाल विवाह का प्रचलन रहा है किन्तु टेलीविजन कार्यक्रम से बाल विवाह में कमी आई है। कोल जनजाति अपने बड़े–बुजुर्गो के सामने पर्दा करने का रिवाज रहा है। साथ ही अन्य जाति के पुरूषों से सामने पर्दा करतीं है।

निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक उत्तरदात्री अधिकांश सुबह और शाम में आसपास के घरो में कार्य करने का कार्य करती है। फिर घर आकर अपने घर का कार्य करते समय टेलीविज़न देखतीं है। कोल परिवार एकाकी प्रकृति के होने को मुख्य कारण पुत्र के विवाह होने के बाद पुत्र स्वयं के लिए अलग मकान बना कर रहना है। शासन द्वारा परिवार को मिलने वाले लाभ भी एकांकी परिवार होने का एक प्रमुख कारण है। सप्ताह में टेलीविजन देखने की प्रवृत्ति में अधिकांश उत्तादात्री सप्ताह में 21 घण्टे या अधिक जो कि रात में टेलीविजन देखतीं हैं। कोल महिलाओं लिए टेलीविजन देखने का प्रमुख कारण मनोरंजक कार्यक्रम जैसे– फिल्मी गीत, फिल्म, हस्य व्यंग वाले कार्यक्रम देखना ज्यादा पसन्द करती है। कुछ संस्कृतिक कार्यक्रम को प्राथमिकता देती है। बातचीत मे परिवर्तन आया है। वे गॉव की बोली जिसे 'रिमही' बोली के साथ–साथं खड़ी हिन्दी भी बोलना सीख गई हैं। टेलीविजन से वेशभूषा तथा रीति रिवाज में परिवर्तन आया है। टेलीविजन से छुआछूत की भावना को पूरी तरह से समाप्त तो नहीं हुई परन्तु इसमें कमी अवश्य आयी है। टेलीविजन में प्रसारित धारावाहिकों एवं समाज कल्याण के विज्ञापनों ने बाल विवाह के दुष्परिणामों से अवगत कराया है। कोल जनजाति अपने बड़े–बुजुर्गो के सामने पर्दा करने का रिवाज है। अतः टेलीविजन देखने का प्रमुख कारण मनोरंजन है और टेलीविज़न से कोल जनजाति की महिलाओं के जीवन शैली बदलीा है साथ ही टेलीविजन का कोल महिलाओं के सार्वजनिक जीवन को परिवर्तित करने में विशेष महत्व रहा है।

संदर्भित ग्रन्थ सूची:

1. Schramm Wilbur (1964) : Mass & National Development California Standard.
2. Tribes and Castes of The Central Provinces of India , **R.V. Russell** Macmillan and Co. Limited St. Martin's Street, London Vol III 1916 Pg. 500
3. हसन अमीर– ए ग्रान्च आफ वाइल्ड फ्लावर, इथनोग्राफिक्स एण्ड फोम कल्चर सोसायटी उ0प्र0 लखनउ, पृ.स. 123
4. The Kol Tribe of Central India, **Walter G. Grsaffiths**, The Asian Society, I Park Street, Calcutta, 1946, Pg. 1
5. Crooke, W., The Tribes and Castes of the North-Western Provinces and Oudh, Vol. III, pp. 295
6. हेडन ए.सी. – रेसेज ऑफ मैन
7. Topographical sheet - 63H, 63L E & 63 D. Survey of India Dehradu-1992.